हिंदी साहित्येतिहास लेखन के मूल स्रोत

डॉ॰ इशरत खान

वस्तुतः साहित्य के इतिहास के मूल-स्रोत का प्रश्न अपने आप में बहुत जटिल है। साहित्येतिहास के निर्माण में युगीन प्रवृत्तियों, सामाजिक एवं सांस्कृतिक मूल्यों तथा चिंतन धाराओं से संबंधित सामग्री का उपयोग अपेक्षित है। कवि अथवा साहित्यकार जिस परिवेश से होकर उभरता है और जिस लक्ष्य की ओर प्रवृत्त होता है, उसका समुचित मूल्यांकन इस सामग्री के अभाव में संभव नहीं है। इस दृष्टि से अंतः साक्ष्य और बहिर्साक्ष्य को साहित्येतिहास के मूल स्रोत के रूप में मान्यता दी जाती है।

हिंदी में साहित्येतिहास लेखन के आधार ग्रंथों के रूप में डॉ॰ रामकुमार वर्मा[1] तथा डॉ॰ लक्ष्मीसागर वार्ष्णेय[2] आदि ने अंतः साक्ष्य और बहिर्साक्ष्य से संबंधित सामग्री की सूचियां प्रस्तुत की हैं। डॉ॰ वर्मा ने साहित्य के परिचय ग्रंथों को अंतः साक्ष्य में रखते हुए 25 ग्रंथों का उल्लेख किया है। इन ग्रंथों को अंतःसाक्ष्य के रूप में कहाँ तक मान्यता दी जा सकती है, यह एक विचारणीय प्रश्न है। 'चौरासी और दो सौ बावन वैष्णवों की वार्ता', 'भक्तमाल', 'श्री गुरु ग्रंथ साहब', 'मूल गुसाई चरित', 'कालिदास हज़ारा' आदि ग्रंथ जिन कवियों का परिचय कराते हैं, उन्हें बहिर्साक्ष्य के रूप में ही स्वीकार किया जा सकता है। संभवतः इसीलिए डॉ॰ लक्ष्मीसागर वार्ष्णेय ने इनकी गणना बाह्यसाक्ष्य के रूप में उपलब्ध सामग्री के रूप में की है। सच तो यह है कि अपार्थिव दृष्टिकोण से प्रवृत्त होने के कारण हिंदी कवियों अथवा साहित्यकारों ने अपने संबंध में बहुत कम लिखा है। मेरी दृष्टि में मध्य-युग तक के हिंदी साहित्य का अध्ययन करने के लिए तद्युगीन विभिन्न संप्रदायों के उपलब्ध साहित्य का पूरा-पूरा उपयोग किया जाना चाहिए। इस दृष्टि से साहित्येतिहास लेखन के आधार ग्रंथों को तीन वर्गों में रखा जा सकता है।

---

1. *डॉ॰ रामकुमार वर्मा : हिंदी साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास, छठवां संस्करण, पृ॰ 17-22*
2. *डॉ॰ लक्ष्मीसागर वार्ष्णेय : हिंदी साहित्य का इतिहास, बारहवाँ संस्करण, जनवरी, 1976, पृष्ठ 51-53*

1. संप्रदायबद्ध साहित्य,
2. इतिहास ग्रंथ,
3. संग्रह-काव्य, फ़ारसी तजकिरे तथा ख़ोज रिपोर्ट आदि ।

संप्रदायबद्ध साहित्य में जैन, सिख तथा वैष्णव साहित्य से प्राप्त सामग्री को आधार रूप में स्वीकृति दी जा सकती है । इतिहास ग्रंथों के अंतर्गत 'तबकाते-अकबरी', 'आइने-अकबरी', 'लबकात-शाहजहानी', 'लुजुके-जहांगीरी', 'मआसिरुल उमरा', 'मआसिरे आलमगीरी', 'मुंतरब्बुत-तवारीख आदि का उल्लेख किया जा सकता है । तृतीय वर्ग के ग्रंथों में कालिदास कृत 'कालिदास हज़ारा' (संवत् 1775), तुलसीकृत 'कविमाला' (संवत् 1712 वि॰) बलदेव कृत 'सत्कविगिरा विलास' (संवत् 1803), सुब्बासिंह कृत 'विव्दांतरंगणी' (संवत् 1874 वि.) सूरदास कवि कृत 'शृंगार-संग्रह' (संवत् 1905 वि.), गोकुलप्रसाद कृत 'दिग्विजय भूषण' (संवत् 1919 वि.), भारतेंदु हरिश्चंद्र कृत 'सुंदरी तिलक' आदि का उल्लेख किया जा सकता है । फ़ारसी तजकिरों में मीर गुलाम अली आज़ाद बिलग्रामी कृत 'तजकिरा सर्वे आज़ाद', 'यदेबेजा' तथा 'सुबहतुल मरजान', शेरखां लोदी कृत 'तजकिरा मिरातुल ख्यालू', वुंदावनदास खुशगो कृत 'तजकिरखुशरो और सफीनरखुशगो', मीर हसन कृत 'तजकिरतुशशोअरां', सैयद मोहम्मद कृत 'तजकिरा तबसिरतुननाजरीन' आदि के नाम विशेष उल्लेखनीय हैं । खोज रिपोर्टों के अंतर्गत डॉ॰ ए॰ टैसिटरी द्वारा संपादित ए डेस्क्रिप्टिव केटेलॉग ऑव बार्डिक एंड हिस्टोरिक मैन्यूस्क्रिप्ट्स (दो भागों में), नागरी प्रचारिणी सभा द्वारा प्रकाशित खोज में उपलब्ध हस्तलिखित हिंदी ग्रंथों का संक्षिप्त विवरण (दो खंड में), डब्लू नॉरमेन ब्राउन और शारयाक द्वारा संपादित केटेलॉग ऑव अमेरिकन ओरिएंटल सीरीज, जी॰एन॰ बाहूरा द्वारा संपादित 'केटेलॉग ऑव मैन्यूस्क्रिप्ट्स इन द महाराजा ऑव जयपुर म्यूज़ियम', कालीप्रसाद द्वारा संपादित, 'केटेलॉग ऑव ओरिएंटल मैन्यूस्क्रिप्ट्स इन द लखनऊ यूनिवर्सिटी लाइब्रेरी, लखनऊ, इंडिया', एस॰ कुप्पास्वामी द्वारा संपादित 'ऐन एलफाबेटिकल इंडेक्स ऑव उर्दू मैन्यूस्क्रिप्ट्स इन द गवर्नमैंट ओरिएंटल मैन्यूस्क्रिप्ट्स, लाइब्रेरी मद्रास' और कस्तूरचंद कासलीवाल द्वारा संपादित 'आमे शास्त्र भंडार जयपुर' की ग्रंथ सूची आदि महत्वपूर्ण कही जा सकती है । इस प्रसंग में हिंदी की शोध-पत्रिकाओं में अप्रकाशित ग्रंथों पर लिखे गए निबंधों का भी उपयोग किया जा सकता है ।

(1) संप्रदायबद्ध साहित्य

संप्रदायबद्ध साहित्य से अभिप्राय उस साहित्य से है जो किसी संप्रदाय विशेष से जुड़ा हुआ है । मध्यकालीन हिंदी साहित्य में मुख्य रूप से जैन, सूफ़ी, वैष्णव और सिख संप्रदायों का विशेष योग है । हिंदी का जैन साहित्य अत्यधिक सशक्त और समृद्ध है । अमरचंद नाहटा ने अनेक जैन ग्रंथों का हिंदी जगत से परिचय कराया । उनके निजी संग्रहालय में जैन संप्रदाय से संबद्ध अनेक हस्तलिखित ग्रंथ हैं । लाइब्रेरी मिसेलेनी त्रैमासिक पत्रिका के अप्रैल 1975

के अंक में सी०डी० दयाल का पाटण के सुप्रसिद्ध जैन पुस्तकालयों की खोज में प्राप्त ग्रंथों का विवरण इस दृष्टि से महत्वपूर्ण है । बीकानेर के बृहत् ज्ञान भंडार में भी जैन पांडुलिपियां संरक्षित हैं । महावीर पार्क रोड, जयपुर से प्रकाशित और कस्तूरचंद कासलीवाल द्वारा संपादित राजस्थान के जैन ग्रंथ भंडारों की सूची भी महत्वपूर्ण कही जा सकती है । जैन ग्रंथों की ओर साहित्येतिहास लेखकों ने न्यायपूर्ण दृष्टि नहीं डाली है । अनेक महत्वपूर्ण जैन ग्रंथ, इतिहास में स्थान नहीं पा सके हैं । इस प्रसंग में डॉ० प्रेमसागर जैन ने 'हिंदी जैन भक्तिकाव्य और कवि' शीर्षक से एक महत्वपूर्ण शोध कार्य किया है । इस ग्रंथ का प्रकाशन भारतीय ज्ञानपीठ से सन् 1964 ई० में हुआ । इसमें भक्तिकाल के 90 जैन कवियों की रचनाओं का मूल्यांकन किया गया है । मध्ययुगीन हिंदी साहित्य को इन रचनाओं का अध्ययन किए बिना ठीक से नहीं समझा जा सकता ।

साहित्य में चिंतन के विकास की कड़ियों को क्रमबद्ध करने के लिए युग विशेष की सभी प्रवृत्तियों और चिंतन धाराओं का तटस्थ भाव से अध्ययन किया जाना चाहिए । भारतीय सूफी चिंतक जैन साहित्य से बहुत निकट संपर्क में आए । अब्दुर्रहमान कृत संदेशरासक की उपलब्ध पांडुलिपियां जैन संग्रहालयों से ही प्राप्त की जा सकीं । भक्ति को सीमित अर्थों में यदि वैष्णव-भक्ति तक ही न रखा जाए तो भक्तिकाल का अध्ययन संवत् 1375 से न करके और भी पहले किया जाना चाहिए ।

भारत में सूफ़ी चिंतन धारा का आविर्भाव ईसा की 12वीं, 13वीं शताब्दियों में पर्याप्त रूप से हो चुका था । हिंदी का प्रारंभिक रूप सूफ़ी कवियों के यहाँ मिलता है । हुजवेरी कृत कश्फुल महजूब सूफ़ी चिंतनधारा का एक महत्वपूर्ण ग्रंथ है । ख़्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती के शिष्य शेख हमीदुद्दीन नागौरी के मलफूजात इस दृष्टि से बहुत महत्वपूर्ण कहे जा सकते हैं । उनकी हिंदी रचनाएं जो उनके मलफूजात के माध्यम से प्रकाश में आई हैं,[1] कबीर काव्य की पूर्वपीठिका के रूप में रखी जा सकती हैं । सूफियों की धार्मिक गायन-वादन (समां) की महफ़िलों में हिंदी का विशेष प्रचलन था । ख़्वाजा फरीदुद्दीन गंज शकर नाथपंथी आस्थाओं से बहुत प्रभावित थे ।[2] इनके मलफूजात भक्ति युगीन साहित्य को समझने में विशेष सहायक है । ख़्वाजा फरीदुद्दीन के दो श्लोक मीर अब्दुल बाहिद के प्रसिद्ध फ़ारसी ग्रंथ सबासनाबिल में संरक्षित हैं जिनसे इस तथ्य की पुष्टि होती है कि ख़्वाजा फरीद की जो हिंदी रचनाएं आदि ग्रंथ में मिलती हैं, उन्हें आसानी से अप्रामाणिक नहीं कहा जा सकता ।[3] हज़रत निज़ामुद्दीन औलिया और ख़्वाजा बंदा नवाज के मलफूजात का अध्ययन भी साहित्येतिहास लेखक के लिए अपेक्षित हैं । निज़ामुद्दीन औलिया की शिष्यता में रहकर अमीर खुसरो ने

---

1. *डॉ० शैलेश ज़ैदी : हिंदी के कतिपय मुसलमान कवि, यूनिवर्सिटी पब्लिशिंग हाउस, अलीगढ़, जनवरी, 1977 ई०, पृष्ठ-66*
2. *वही, अलखबानी, भारत प्रकाशन मंदिर, अलीगढ़, 1971, पृ० 83 की पाद टिपण्णी*
3. *वही, पृ० 62*

जिस स्तर के हिंदी काव्य की रचना की उसे मान्यता प्राप्त हो चुकी है । चिश्ती परंपरा के प्रसिद्ध सूफी शेख अब्दुल कुद्दूस गंगोही का फ़ारसी ग्रंथ 'रुश्दनामा' पंद्रहवीं शताब्दी की चिंतनधारा पर पर्याप्त प्रकाश डालता है । इस ग्रंथ में अनेक सूफी और नाथपंथी कवियों की रचनाएं अपने विचारों की पुष्टि के लिए शामिल की गई हैं । डॉ॰ अतहर अब्बास रिज़वी तथा डॉ॰ शैलेश ज़ैदी के प्रयत्नों से यह ग्रंथ 1971 ई॰ में भारत प्रकाशन मंदिर, अलीगढ़ से अलखबानी के नाम से हिंदी में प्रकाशित हो चुका है । इसमें गोरखनाथ की कविताओं के अतिरिक्त शेख नूर, शेख अहमद, शेख पियारा और शेख आरिफ की हिंदी रचनाएं सम्मिलित की गई हैं । 16वीं शताब्दी में लिखा गया 'सबासनोबिल' ग्रंथ भी सूफी चिंतनधारा को समझने में सहायक हो सकता है । अन्य ग्रंथों में सिचरुल, औलिया, सियरुल आरिफीन अखबारुल अख्यार, लताइफ कुद्दूसी, रबजीनतुल आसफिया, गुलशनेराज़, मज्मउल बहेरेन, दबिस्ताने मजाहिब और काशिफुल अस्तार के नाम लिए जा सकते हैं । सामान्यतः सूफ़ी कवियों को ऐकेश्वरवादी कहा जाता है किंतु अनेक सूफ़ी ऐसे हैं जो 'वहदतुल बुजूद' (केवल स्ववाद) के दर्शन में आस्था रखते थे । सूफियों के दर्शनिक चिंतन पर विचार करते समय वहदतुल बुजूद, वहदतुशशाहूद आदि चिंतन धाराओं पर भी प्रकाश डालना चाहिए । वैष्णव साहित्य से संबद्ध ग्रंथों में मूल स्रोत के रूप में वार्ता-साहित्य और भक्तमाल की चर्चा की जाती है । हिंदी में जो वार्ताएं उपलब्ध हैं, उन्हें मुख्य रूप से इस प्रकार रखा जा सकता है :-

1. चौरासी वैष्णवन की वार्ता
2. दो सौ बावन वैष्णवन की वार्ता
3. निज वार्ता
4. धरु वार्ता
5. बैठक चरित्र
6. श्री आचार्य जी प्राकट्य वार्ता
7. भावसिंधु
8. श्री नाथ जी की प्राकट्य वार्ता

उपर्युक्त वार्ताएं बल्लभ संप्रदाय की पुष्टिमार्गीय परंपरा से संबद्ध हैं और उनका रचना काल संवत् 1535 या इसके बाद का है । वार्ताओं में समाहित सामग्री ईश्वर-भक्ति, वैष्णव भक्ति, दास्य भावना, असमर्पित त्याग, निवेदन-पुकार, ब्रजभूमि, श्री यमुना जी का माहात्म्य, गिरिराज माहात्म्य, सत्संग, दुस्संग, सेवा प्रणाली, सेवा भावना, लोक धर्म, वेद धर्म, पुष्टि मार्ग के आधार ग्रंथ, आचार महत्व, पुष्टिमार्गीय त्याग-भावना, वैराग्य, पुष्टि भक्ति स्वरूप पुष्टिमार्गीय व्यवहार, विचार शैली, गृहस्थ धर्म, भाव-भावना, स्वरूप-भावना आदि से संबद्ध हैं ।[1] हिंदी साहित्य के इतिहास लेखन में "चौरासी वैष्णवन की वार्ता" तथा दो सौ बावन वैष्णवन की वार्ता विशेष महत्वपूर्ण ग्रंथ समझे जाते हैं । वार्ता साहित्य में जिन भक्त कवियों का उल्लेख मिलता है उनके नाम इस प्रकार हैं : - दामोदर दास, हरसानी, अवधूतदास, कविराज भाट, कन्हैयालाल, कृष्णदासी, मदाधरदास, गोपालदास, गोपालदास इंटोडा क्षत्री, गोपालदास

---

1. *डॉ॰ हरिहरनाथ टंडन : वार्ता साहित्य - एक वृहत् अध्ययन, भारत प्रकाशन मंदिर, अलीगढ़, पृ॰ 56*

क्षत्री, (नरोड़ा के) जीवनदास क्षत्री, श्री पीरदास, त्रिपुरादास, कायस्थ प्रभुदास भाट, (सिंहनाद) पद्मनामदास, विष्णुदास छीपा, भगवानदास सांचो, मुकंददास कायस्थ, रामदास प्रोहित, लघुपुरुषोत्तमदास, सूरदास जी, हरजीव (हरिजी कोठारी) इन कवियों का नामोल्लेख चौरासी वैष्णवन की वार्ता में हुआ है ।

दो सौ बावन वैष्णवन की वार्ता के कवि इस प्रकार हैं - राजा आसकरन अजबकुंवरि, अलोखन पठान, कृष्णभट्ट, कान्हरदास, कटहरिया, गंगाबाई क्षत्राणी, ज्ञानचंद सेठ, (आगरा के) श्री गोविंद स्वामी या गोविंददास, गोविंददास खवास, गोपालदास (रूपपुरा), गोवर्धनदास, मन्नालाल, चतुर्भुजदास जी, चतुर्भुजदास मिश्र, चतुरबिहारी, छीतस्वामी, जन भगवानदास दो भाई, जदुनाथदास, जाड़कृष्णदास, टोडरमल, तानसेन, गवैया, तुलसीदास जी, ताज, दयाल, धर्मदास, ध्यानदास, धोबी, नंददास जी, नाभाजी मह (संस्कृत कवि) पृथ्वीसिंह जी, पर्वत सेन, ब्रह्मदास, बीरबल, राजा भीम, माणिकचंद छत्री, नेहा धीमर, मदनगोपालदास कायस्थ, माधवदास, दलाल, मथुरादास, यादवेंद्रदास, राधौदास, रूपमुरारिदास, रसखान सैयद पठान, रजरामहित भगवानदास, रामदास जी, रामदास बड़े, राधौदास की बेटी, वृंदावनदास, सगुणदास, हृषिकेस (आगरा) श्री रामदास जी ।

नाभादास कृत 'भक्तमाल' हिंदी साहित्य का अत्यंत महत्वपूर्ण ग्रंथ है । इसकी लोकप्रियता का अनुमान इसी से लगाया जा सकता है कि मानस के बाद सर्वाधिक टीकाएं इसी ग्रंथ की लिखी गई हैं । नवलकिशोर प्रेस, लखनऊ से प्रकाशित प्रियादास कृत रस बोधिनी टीका, राधाकृष्णदास द्वारा संपादित ध्रुवदास कृत भक्तनामावली, गद्य टीकाकार रूपकलाजी, कृत भक्ति सुधा स्वाद तिलक, महाराजा रघुनाथ सिंह जू देव कृत भक्तमाला, पं० ज्वाला प्रसाद जी मिश्र कृत भक्तमाल हरिभक्ति प्रकाशिका, भारतेंदु हरिश्चंद्र कृत उत्तरार्द्ध भक्तमाल, श्री प्रतापसिंह कृत भक्तमाल, कालीचरण चौरसिया द्वारा संपादित भक्त कल्पद्रुम, मीरपुर वाले तुलसीराम अग्रवाल कृत भक्तमाल आदि टीकाएं एवं ग्रंथ इस दृष्टि से महत्वपूर्ण कहे जा सकते हैं । इतिहास के निर्माण सूत्रों में इन ग्रंथों को अत्यंत महत्वपूर्ण समझा जाता है ।

अनेक आत्मख्याति में अरुचि रखने वाले भक्तों को प्रकाश में लाने का श्रेय इसी ग्रंथ को है । इस ग्रंथ का महत्व दो दृष्टियों से है :-

1. धार्मिक ग्रंथ होने के कारण 2. जीवनी ग्रंथ का आरंभ इसी ग्रंथ से होता है । नाभा जी ने भक्तमाल में 200 भक्तों के पुनीत चरित्रों के यश का गान किया है । छप्पयों में भक्तों की प्रशंसापूर्ण जीवनी लिखी है । कहीं एक छप्पय में एक भक्त का, कहीं एक छप्पय में बहुत-से भक्तों का जीवन चरित्र दिया है । भक्तों के चरित्र देने में निम्न सिद्धांत कार्य करते हैं :-

संचयन कर्ता की किसी विशेष संप्रदाय के प्रति आस्था, रामानंदी संप्रदाय के कुछ चुने हुए भक्त कवियों के प्रति आकर्षण जैसे :-

तुलसीदास कलि कुटिल जीव निस्तार हित बाल्मीक तुलसी भयो ।

संसार अपार के पार को, सुगम रूप नक्को लयौ ।[1]

साहित्येतिहास लेखकों ने भक्तमाल की सामग्री का पर्याप्त रूप से उपयोग किया है, इसलिए इस प्रसंग में विशेष कुछ लिखने की अपेक्षा नहीं है । हिंदी के सिख साहित्य को भी साहित्येतिहास लेखकों ने उपेक्षा की दृष्टि से देखा है और साहित्येतिहास में उसे उचित स्थान नहीं मिल सका है । अब सिख साहित्य और उससे संबंधित अनेक महत्वपूर्ण ग्रंथ प्रकाश में आ गए हैं ।[2] साहित्येतिहास लेखकों को तटस्थ एवं निष्पक्ष भाव से इस सामग्री का उपयोग करना चाहिए ।

- ☐ जयराम मिश्र—गुरु ग्रंथ दर्शन, साहित्य भवन, इलाहाबाद, 1960 ई॰ पृष्ठ 358 ।
- ☐ जयराम मिश्र—नानक वाणी, संपादक श्री कृष्णदास, मित्र प्रकाशन, इलाहाबाद, 2078 वि॰, पृष्ठ 846 ।
- ☐ प्रसिन्नी सहगल—गुरु गोविंद और उनका काव्य, हिंदी साहित्य भंडार लखनऊ, 1965 ई॰, पृ॰ 496 ।
- ☐ गंगराडे रमेशचंद्र—सिंगा जी की वाणी, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली ।
- ☐ कमलनारायण कमलेश—सिखों के गुरू, हिंदी साहित्य भंडार, दिल्ली ।
- ☐ नंदकुमार देव शर्मा—सिखों का उत्थान और पतन, नागरी प्रचारिणी सभा, काशी ।
- ☐ प्रफुल्लचंद मुक्त—सिख जाति, ग्रंथमाला कार्यालय, पटना
- ☐ श्री जपुजी सरीक—ग्रंथ साहित्य जपुजी टीका (नारायण सिंह) अमृतसरे भाई भूटासिंह प्रतापसिंह, दूसरा संस्करण, नवंबर, 1956, सुखमनी - ग्रंथ साहिब टीका, नारायण सिंह, अमृतसर भाई भूटासिंह प्रताप सिंह 1954 ई॰ इत्यादि ।

(2) इतिहास ग्रंथ

साहित्येतिहास लेखन के लिए लेखक में युगीन परिस्थितियों का यथार्थ बोध होना आवश्यक है । हिंदी के साहित्येतिहास लेखक अपेक्षित ऐतिहासिक दृष्टि और पर्याप्त प्रमाणों

---

1. *नाभादास कृत भक्तमाल, कल्याण, भक्त चरितांक से उद्धृत, संपादक, हनुमानप्रसाद पोद्दार, गीताप्रेस, गोरखपुर, पृष्ठ 13*
2. *रत्नसिंह जग्गी-दशम् ग्रंथ की पौराणिक पृष्ठ-भूमि, भारतीय साहित्य मंदिर, दिल्ली, 1965 ई॰, 384 पृष्ठ ।*

के अभाव में भी आदिकाल से लेकर आधुनिक काल तक की सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक और राजनीतिक परिस्थितियों का विवेचन बहुत धड़ल्ले से करते हैं। इतिहास विष भी है और अमृत भी। दोनों ही दृष्टियों से इतिहास का उपयोग किया जा सकता है। जहां भारत के विभिन्न संप्रदायों के कवि और लेखक हिंदी की समृद्धि के लिए एकजुट होकर योग दे रहे थे वहीं हिंदी के साहित्येतिहास लेखकों ने सांप्रदायिक तत्व की भावना को बढ़ावा दिया और इसी प्रकार की सामग्री इतिहास के नाम पर प्रस्तुत की गई। उदाहरण स्वरूप भक्ति काल के आविर्भाव के प्रसंग में इस प्रकार की धाराएं स्थापित की गईं कि मुस्लिम शासकों की अत्याचारी नीति ने हिंदुओं को संत्रस्त कर दिया। बड़ी संख्या में देव मंदिर ढाए गए जिसके फलस्वरूप हिंदुओं के लिए भक्ति का आश्रय लेने के अतिरिक्त कोई चारा न रह गया।[1]

विचारणीय यह है कि भक्ति न तो मुसलमानों की जायदाद है न हिंदुओं की पूंजी। भक्ति भावना संपूर्ण जाति की धरोहर है। हिंदी साहित्येतिहास लेखकों ने भक्ति का अर्थ व्यापक अर्थों में न करके संकीर्ण अर्थों में किया है। फलस्वरूप राम नाम की महिमा का गुणगान करने वाले कबीर तो भक्ति काव्य की परिधि में आ गए किंतु उनके पूर्ववर्ती बाबा फरीद और उनकी परंपरा के अनेक कवियों को भक्तिकाल की सीमाओं में स्थान नहीं मिला। मेरे विचार में साहित्येतिहास लेखक भक्ति आंदोलन के स्थान पर यदि वैष्णव आंदोलन शब्द का प्रयोग करें तो अधिक समीचीन होगा। अन्यथा कबीर से पूर्व के सूफी नाथ योगी और जैन कवियों को भी भक्ति की सीमाओं में लेना और भक्तिमाल को कम से कम डेढ़ सौ वर्ष पहले से प्रारंभ करना होगा।[2] हिंदी के काव्य ग्रंथों को आधार मानकर मध्ययुगीन इतिहास ग्रंथों के साथ सामंजस्यपरक दृष्टि से यदि युग विशेष की सामान्य परिस्थितियों की विवेचना की जाए तो समन्वयात्मक भावना को अधिक बल मिलेगा। यहाँ जिन इतिहास ग्रंथों के नामोल्लेख किए गए हैं, उन्हें इस दृष्टि से महत्वपूर्ण कहा जा सकता है। इन ग्रंथों में हिंदी कवियों से संबंधित प्रचुर सामग्री मिल जाती है और युगीन परिस्थितियों का प्रामाणिक आधार इनमें खोजा जा सकता है।

(3) संग्रह-ग्रंथ, फ़ारसी तजकिरे तथा खोज रिपोर्ट आदि

साहित्येतिहास लेखकों ने संग्रह-ग्रंथों और खोज रिपोर्टों का उपयोग करते हुए भी उससे पूरा-पूरा लाभ नहीं उठाया है। फ़ारसी के तजकिरों की सामग्री की ओर तो इतिहास लेखकों की दृष्टि ही नहीं जा सकी है। गोपालचंद्र सिंह ने 'फ़ारसी और उर्दू के तजकिरों एवं अन्य ग्रंथों में हिंदी साहित्य के इतिहास की सामग्री' शीर्षक लेख, हिंदी अनुशीलन के जुलाई-सितंबर

(शेष पृष्ठ 138 पर)

---

1. *रामचंद्र शुक्ल, हिंदी साहित्य का इतिहास, नागरी प्रचारिणी सभा काशी, पृ॰ 43*
2. *द्रष्टव्य : डॉ॰ शैलेश ज़ैदी कृत हिंदी के कतिपय मुसलमान कवि—ग्रंथ का पूर्व शब्द।*

घर उत्तेजना और उतावली से भर जाता है - यह कर, वह कर, इधर ला, उधर ले जा, यह धो, इसे पोंछ . .. . जैसे हाथों में मशीन और पांवों में पहिए लग गए हैं। बिजली की-सी गति से सब जुटे हैं।

वातावरण में शहनाई की धुन गूंजती है, मंडप में फेरे होते हैं, बारात-भोज होता है, और यों संक्षिप्त रूप में सबकुछ परंपरागत ढंग से संपन्न हो जाता है और विदाई की हलचल मच जाती है।

कर्नल साहब देखते हैं, उनकी बेटी, वह खिलंदरी लड़की हवा में लहराता दुपट्टा फेंक बनारसी गुलाबी साड़ी का पल्लू सिर पर ओढ़े चेहरे पर हर्षोल्लास की लालिमा समेटे, गरिमामयी गृहिणी के रूप में विदा होने को कार के पास खड़ी है, उनका मन भर आता है, आँखें गीली हो जाती हैं, बाँहों में लेकर उसे प्यार करते हैं और फूलों से सजी कार में बैठाते हैं। शेखर पाँव छूने को झुकता है, वे उसे आलिंगन में ले लेते हैं। बोल नहीं पाते, उसकी पीठ थपथपाते हैं और रुँधे गले से कहते हैं - "इसका ख़्याल रखना बेटा !"

□

पृष्ठ 91 का शेष भाग

1955 के अंक 3 में प्रकाशित किया था। यह लेख साहित्येतिहास लेखकों को एक नई दिशा देता है किंतु जब तक प्रकाशित किसी साहित्येतिहास ग्रंथ में इसकी सामग्री का उपयोग नहीं किया गया, मैं समझती हूँ कि साहित्येतिहास लेखकों को फ़ारसी और उर्दू तजकिरों में संरक्षित बहुमूल्य सामग्री का यथोचित उपयोग करना चाहिए। संग्रह ग्रंथों और खोज रिपोर्टों के संबंध में इतना कह देना और आवश्यक प्रतीत होता है कि अनेक मुस्लिम पुस्तकालय ऐसे हैं जहाँ फ़ारसी लिपि में महत्वपूर्ण संग्रह ग्रंथ संरक्षित हैं। इन पुस्तकालयों में कुछ एक की हस्तलिखित ग्रंथों की सूचियां उर्दू और अंग्रेज़ी में प्रकाशित हुई हैं। इनमें स्टेट सेंट्रल लाइब्रेरी, हैदराबाद, सालारजंग लाइब्रेरी हैदराबाद, खुदाबख्श लाइब्रेरी, पटना, मौलाना आज़ाद लाइब्रेरी, अलीगढ़, रजा स्टेट लाइब्रेरी, रामपुर में अनेक ऐसी महत्वपूर्ण पांडुलिपियां हैं जिनकी ओर; फ़ारसी लिपि में होने के कारण; हिंदी विद्वानों की दृष्टि नहीं गई है। मेरी समझ में इस सामग्री का पूरा का पूरा उपयोग करना चाहिए।

□